रिकार्ड–जाग सजनियां जाग..... ओमशांति प्रातःक्लास 31–5–67
मीठे2 रुहानी बच्चों ने गीत सुना। बुद्धि में स्वदर्शन चक्र फिर गया। बाप भी स्वदर्शन चक्रधारी कहलाते हैं ;क्योंकि सृष्टि की आदि,मध्य,अंत को जानना यही है स्वदर्शनचक्रधारी बनना। यह बातें सिवाय बाप के और कोई समझा नहीं सकता। तुम बच्चों का सारा मदार है साइलेंस पर। सभी मनुष्य कहते भी हैं शांतिदेवा। हे शांति देने वाले। मालूम किनको भी नहीं है कि शाति कौन देते हैं। शांतिधाम कौन ले जावेंगे यह भी तुम्हीं को पता है। और कोई नहीं जानते हैं। यह भी बच्चे जानते हैं कि हम स्वदर्शनचक्रधारी बनते हैं। बाबा ही स्वदर्शन चक्रधारी बनाते हैं। देवता कोई स्वदर्शन चक्रधारी कहला नहीं सकते। कितना रात–दिन का फर्क है। तुम क्या कहते हो और भक्ति क्या कहती है। बाप तुम बच्चों को समझाते हैं कि तुम हर एक स्वदर्शनचक्रधारी हो नम्बरवार पुरुषार्थअनुसार। बाप को याद करना है और सृष्टिचक्र को याद करना है। यही मुख्य है। बाप को याद करना गोया शांति का वर्सा लेना। शांति में सब जाते हैं। तुम्हारी आयु भी बड़ी होती जाती है। निरोगी काया बनती जाती है। सिवाय बाप के और कोई स्वदर्शन चक्रधारी बना नहीं सकते। आत्मा ही स्वदर्शन चक्रधारी बनती है। बाप भी है ;क्योंकि सृष्टि की आदि,मध्य,अंत का ज्ञान ही उनके पास है। गीता भी सुनाकर अब नई दुनियां स्थापन कर रहे हैं। गीता तो मनुष्यों की बनाई हुई है। बाप बैठ सारा समझाते हैं। वो है सब आत्माओं का बाप। सब बच्चे आपस में भाई2 हो जाते हैं। बाप जब नई दुनियां रचते हैं तो प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा तुम भाई–बहन बनते हो। हर एक ब्र.कु.कु.है। यह बुद्धि में रहने पर फिर स्त्री–पुरुष का भान निकल जाता है। मनुष्य तुम पर हंसी करते हैं। यह नहीं समझते हैं कि हम भी भाई–भाई हैं। फिर बाबा रचना रचते हैं तो भाई–बहन हो जाते हैं। क्रिमिनल दृष्टि निकल जाती है। इसलिए ही गंधर्व विवाह भी गाया हुआ हे। यहां की ही बात है। बच्चे शादी नहीं करते हैं तो मां–बाप की कितनी मार पड़ती है। .....लखपति–करोड़पति हो तो भी बच्चे को शादी के लिए बहुत तंग करते हैं। कुमारियों को भी बहुत तंग करते हैं। इसलिए ही उनको बचाने लिए यह युक्ति रची हुई है। दोनों प्रण करते हैं कि बाबा हम पवित्र बनकर आपका नाम रोशन करेंगे। हम उनको भी बचावेंगे। सन्यासी तो कहते हैं कि आग–कपूस इकट्ठे नहीं रह सकते। तुम फिर रहकर दिखाओ। पुरुष में ताकत रहती है। चाहे तो पत्नी को पवित्र रख सकते हैं। प्रतिज्ञा करते हैं कि बाबा हम क्यों नहीं पवित्र रहेंगे। बाप याद भी दिलाते हैं कि तुम पुकारते चले आये हो हे पतित–पावन। अब मैं आया हूँ तो कहता हूँ कि यह अंतिम जन्म पवित्र रहो तो तुम पवित्र दुनियां का मालिक बन जावेंगे। यह प्रदर्शनी तो तुम्हारे घर2 में होनी चाहिए ;क्योंकि तुम हो सच्चे ब्राह्मण। इन पर समझाना भी बहुत सहज है। 84का चक्र तो बुद्धि में है। अच्छा ,कोई कहेंगे बाबा हम समझा नहीं सकते। बाकी हम घर में प्रदर्शनी तो खोल देते हैं। बाबा कहते हैं तो अच्छा तुमको एक टीचर दे देंगे। वो आकर सर्विस करके जावेगी। भक्तिमार्ग में भी कोई कृष्ण की पूजा अथवा मंत्र–जंत्र आदि नहीं जानते हैं तो ब्राह्मण को बुलाते हैं। वो रोज आकर पूजा करके जाते हैं। तुम भी मंगवा सकते हो। यह है तो बहुत सहज कि बाप ने प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा सृष्टि रची होगी। तो होंगे जरूर ब्र.कु.कु होंगे और बहन–भाई बने होंगे। प्रतिज्ञा करते हैं कि हम दोनों भाई–बहन होकर रहेंगे। विकार की दृष्टि नहीं रखनी है। सो हम नहीं रखेंगे। एक/दो को सावधान कर उन्नति को पावेंगे। मुख्य तो है ही याद की यात्रा। वो लोग साइंस के बल से कितनी उपर जाने की कोशिश करते हैं ;परंतु उपर में कोई दुनियांयें थोड़े ही रखी हैं। यह है ही साइंस की अति में जाना। अब तुम साइलेंस की अति में जाते हो श्रीमत पर। वो है आसुरी मत। उनकी है साइंस, तुम्हारी है साइलेंस। बच्चे जानते हैं कि आत्मा तो खुद ही शांत स्वरूप है। इस शरीर द्वारा सिर्फ पार्ट मात्र बजाना होता है। कर्म बिना तो कोई रह नहीं सकते। बाप कहते हैं अपने को आत्मा शरीर से अलग समझ बाप को याद करो तो तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे। बहुत ही.....है।

सबसे जास्ती जो मेरे भक्त अर्थात् शिव के पुजारी हैं उनको जाकर समझाओ। उंच ते उंच पूजा है ही शिव की ;क्योंकि वो ही सबका सदगति दाता है। अब तुम बच्चे जानते हो कि बाप आये हैं सबको साथ ले जाने। अपने ही समय पर हम भी ड्रामाप्लानअनुसार कर्मातीत अवस्था को पावेंगे। फिर विनाश हो जावेगा। तो पुरुषार्थ यही करना है कि हम आत्मायें सतोप्रधान बन जावें। बाप की श्रीमत पर चलना है। श्रीमत भगवत गीता कहते हैं ना। कितनी बड़ी महिमा है। मुख्य गीता ही झूठी तो सब बाल–बच्चे ही झूठे हो जाते हैं। बच्चे जानते हैं कि इस समय है ही रावणराज्य। शैतानी राज्य। तुम भक्ति मार्ग के शास्त्र पढ़ते ही आये हो। फिर भी पढ़ने हैं। आधा कल्प भक्ति। फिर आधा कल्प तुम ज्ञान से सदगति को पाते हो। सदगति दाता को ही बुलाते हैं ;क्योंकि यहां पर दुर्गति है। सब पतित हैं ;परंतु अपने को पतित आत्मा समझते थोड़े ही हैं। कहते हैं विकार बिना बच्चे पैदा कैसे होंगे?अरे , बच्चे तो सतयुग में भी होते हैं ना। उनको तो कहा ही जाता है सम्पूर्ण निर्विकारी दुनियां। देवताओं की महिमा भी गाते हैं सर्वगुण सम्पन्न.....। बाप ही आकर सम्पूर्ण निर्विकारी बनाते हैं। जब फिर सम्पूर्ण पतित दुनियां होती है तब ही बाप आकर सम्पूर्ण निर्विकारी दुनियां बनाते हैं। सब कहते हैं कि हम भगवान के बच्चे हैं। तो जरूर पास में स्वर्ग का वर्सा होना चाहिए ना। प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा हम अभी भी भाई–बहन बने हैं फिर भी बनेंगे। कल्प पहले भी बाप आया था। शिव जयंती मनाते थे। तो जरूर प्रजापिता ब्रह्मा के बच्चे बने होंगे। बाप से प्रतिज्ञा करते हैं कि बाबा हम आपस में पवित्र बनकर रहेंगे। आपके डायरैक्शन्स पर चलते रहेंगे। कोई बड़ी बात तो नहीं है ना। अभी समझते हैं कि वो तो विख है। आधा कल्प तक हम विख खाते आये हैं। जो भावी थी वो पास्ट हुई। अब तो यह अंतिम जन्म है। यह मृत्युलोक खतम होना है। यह है ही शैतानी राज्य रावण राज्य। रावण को जलाते आते हैं। तुम अभी रावण को नहीं जलावेंगे। अभी तुम समझते हो कि यह तो नानसेंसपना है। यह भी ड्रामा में नूंध है। अब बाप समझाते हैं कि इन गुरूओं को मारो गोली। इन्होंने ही तुमको पतित बनाया है। यह है ही भक्तिमार्ग के गुरू। यह कोई पावन बनाने वाले नहीं हैं। साधु–संत आदि की कितनी महिमा है। बाप कहते हैं कि जो अपने को भगवान कहलाते हैं वो हिरण्याकश्यप जैसे दैत्य समझो। भगवान जो सदगति दाता है उस मिसल अपने को कहते हैं तो शैतान ठहरे ना। कोई कहे हम भगवान हैं। अगर कोई समझू मनुष्य हो तो कहें कि यह हमारा भगवान गॉड बाप है?गुस्से में आकर पादर ठोक देवे। अभी तुम समझदार बने हो। कोई अपने को भगवान कहे तो कहो भगवान तो सर्व का सदगति दाता है। फिर यह अपने को भगवान कैसे कहला सकते हैं?यह तो हरण्याकश्यप है ;परंतु कुछ कर नहीं सकते ;क्योंकि समझते हैं कि ड्रामा का खेल है। एक तरफ तो शिवोअहम् भी कहते हैं। फिर दूसरी तरफ शिव की पूजा भी करते हैं। ईश्वर को सर्वव्यापी भी कहते हैं। फिर उनकी पूजा भी करते रहते हैं। बिल्कुल ही बुद्धि मारी जाती है। इसलिए ही भारत का हाल देखो तो क्या है?कल की ही तो बात है ना। आज भारत पत्थर बुद्धि नर्क है। कल स्वर्ग बनेगा। फिर हम हीरे–जवाहर के महल बनावेंगे। बाप तुमको स्वदर्शनचक्रधारी बना रहे हैं। बाप कहते हैं कि अब सर्विस में तत्पर रहो। घर2 में प्रदर्शनी खोलो। इन जैसा महान पुण्य कोई होता नहीं। जिनको बाप का अब रास्ता बताना उस जैसा पुण्य कोई होता नहीं। बाप कहते हैं मामेकम् याद करो तो पाप विनाश हो जावेंगे। बाप को बुलाते भी इसलिए हो कि हे पतित–पावन आओ,हे लिबरेटर आओ। तुम्हारा भी नाम पांडव गाया हुआ है। बाप भी पण्डा है। अब आत्माओं को ले जावेंगे। वो है जिस्मानी पण्डे। यह है रुहानी। वो जिस्मानी यात्रा यह है रुहानी। सतयुग में जिस्मानी यात्रा भक्तिमार्ग की होती ही नहीं है। वहां पर तुम पूज्य बनते हो। अब बाप तुमको कितना समझदार बनाते हैं। तो बाप की मत पर चलना चाहिए ना। कोई भी संशय आदि हो तो पूछना चाहिए। कइयों को खयाल आता है कि बाबा सन्यासियों के लिए

ऐसे क्यों कहते हैं?अरे, बाप (कोई) निंदा थोड़े ही कर रहे हैं। यह तो बाप समझाते हैं छुड़ाने के लिए। यह समझाया जाता है कि कैसे अपने को भगवान कहला कर दुर्गति को पहुंचाते हैं। मैं तुम्हारा सदगतिदाता हूँ। फिर तुम दुर्गति में कैसे गये?आधा कल्प बाद फिर से यह 5विकार प्रवेश करते हैं। उसमें भी पहले आता है देहअभिमान। अब बाप कहते हैं मीठे2 बच्चों देहीअभिमानी बनो। अपने को आत्मा निश्चय कर और बाप को याद करो। तुम मेरे लाडले बच्चे हो ना। आधा कल्प के तुम आशिक हो। एक के ही ढरे नाम रख दिये हैं। कितने नाम, कितने मंदिर बनाये हैं। मैं हूँ तो एक ही। मेरा नाम है शिव। हम 5000वर्ष पहले भी भारत ही में थे। अब भी एडॉप्ट कर रहे हैं। ब्रह्मा के बच्चे होने के कारण तो पोत्रे,पोत्रियां हो गये। यहां वर्सा मिलता ही है आत्मा को। यहां बहन—भाई का सवाल ही नहीं उठता। आत्मा ही .....वर्सा लेती है। सबका हक है। बेहद का बाप बेहद के बच्चों को बेहद की नालेज दे रहे हैं। बेहद का त्याग करवाते हैं। कहते हैं इस पुरानी दुनियां में तुम जो कुछ भी देखते हो वो .....विनाश हो जाना है। महाभारत लड़ाई भी बरोबर है। बाप ने राजयोग सिखाया था। राजस्वअश्वमेध यज्ञ रचा था। फिर राजाई लिए सतयुग नई दुनियां जरूर चाहिए। पुरानी दुनियां का विनाश भी हुआ था। 5000वर्ष की बात है ना। यह लड़ाई लगी थी। जिससे (गेट) खुले थे। बोर्ड पर यह लिख दो कि स्वर्ग के द्वार कैसे खुल रहे हैं आकर समझो। तुम ना समझा सकते हो तो दूसरा कोई बुलाओ। फिर ढेरों की ढेर वृद्धि होती जावेगी। तुम कितने ढेर ब्राह्मण—ब्राह्मणियां हो। प्रजापिता ब्रह्मा के बच्चे वर्सा मिलता है शिवबाबा से। वो ही सबका बाप है। यह तो बुद्धि में अच्छी रीति याद रखना चाहिए कि हम ब्राह्मण सो देवता बनते हैं। हम देवता थे। फिर चक्र लगाया। अब हम ब्राह्मण बने हैं फिर विष्णुपुरी में जावेंगे। ज्ञान है तो बहुत सहज ;परंतु कोटों में कोउ ही निकलते हैं। प्रदर्शनी में कितने ढेर आते हैं। कोटों में कोउ निकलते हैं। कोई तो सिर्फ महिमा करते हैं। बहुत अच्छा है। हम तो (कल) आवेंगे। कोई विरले सात रोज का कोर्स उठाते हैं। सात रोज की बात भी अभी की ही है। सात दिन आपको भट्ठी में पड़ना है। अपने को आत्मा समझ बाप को याद करने पर सारा किचरा निकल जावेगा। आधा कल्प की गंदी बिमारी देह अभिमान की है। वो निकालनी है। देहीअभिमानी बनना है। सात रोज का कोर्सवाले कोई बहुत थोड़े हैं। बाण कोई को सेकेंड में भी लग सकता है। देरी से आने वाले भी आगे जा सकते हैं। कहेंगे हम रेस कर बाबा से पूरा वर्सा ले ही लेंगे। कई तो पुरानों से भी तीखे चले जाते हैं ;क्योंकि अच्छे2 प्वाइंट्स तैयार मिल जावेंगे। प्रदर्शनी आदि पर समझाने में कितना सहज होता है। खुद नहीं समझा सको तो दूसरी कोई बहन को बुलाओ। रोज आकर (कथा) करके जावे। 5000वर्ष पहले ही इन ल.ना. का राज्य था। जो ही 1250वर्ष चला। कितनी छोटी सी कहानी है। हम सो देवता थे। फिर सो क्षत्रिय सो वैश्य सो शूद्र बने। हम आत्मा ही अब ब्राह्मण बनती हैं। फिर हम ही सो देवता बनेंगे। हम सो का अर्थ कितना युक्तियुक्त सुझाते हैं। विराट रूप भी है ;परंतु उसमें से ब्राह्मण को तो उड़ा ही दिया है और शिवबाबा को भी उड़ा दिया है। अर्थ कुछ भी नहीं समझते। अब तुम बच्चों को मेहनत करनी ही है याद की। और (कोई) संशय में नहीं आना चाहिए कि यह क्यों हुआ?यह क्यों करते हैं?सब बातें छोड़कर एक बात में रहो हमको तमोप्रधान से सतोप्रधान जरूर बनना है। जितना बाप को याद करेंगे उतना ही विकर्माजीत पद को पावेंगे। बाकी बाह्यात बातों में माथा खराब नहीं करना है। सब बातों में एक बात मुख्य है उसको ना भूलो। कोई साथ टाइम वेस्ट नहीं करो। तुम्हारा टाइम बहुत वैल्युएबल है। तूफानों से डरना नहीं है। बहुत तकलीफें आवेंगी। घुटका पड़ेगा ;परंतु बाप की याद को नहीं भूलना है। याद से ही पावन बनना है। पुरुषार्थ कर उंच पद पाना है। यह बूढ़ा उंच (बाबा) पा सकता है। हम क्यों नहीं पा सकते हैं?यह भी तो पढ़ाई ही है ना। तुमको इसमें कुछ भी किताब आदि उठाने की दरकार नहीं है। बुद्धि में सारी कहानी है ;लेकिन हर एक के पुरुषार्थ से उसका पद समझा जा सकता है। अच्छा, आज्ञाकारी बच्चों को बाबा का प्यार। ओम।